

Shakti Puja

Date : 5th December 1995
Place : Delhi
Type : Puja
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 07
English	-
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

आत हम सत्य युग में शक्ति की पूजा करेंगे। क्योंकि सत्य-युग की शुरुआत हो गई है और इसी वातावरण के कारण शक्ति का रूप भी प्रखर हो गया है। शक्ति का पहला स्वरूप है कि वो प्रकाशमान है, तेजस्वी है, तेज पुण्ड्र है। यह शक्ति जब प्रगट होगी, पूर्णतया इस सत्ययुग में, तो हर एक गलत किस्म के लोग सामने उपस्थित हो जायेंगे। उनकी सारी कार्यवाहियां सामने आ जायेंगी। उनकी जो कार्य-प्रणाली आज तक चोरी छुपे चल रही थी और उसमें वो मग्न थे, वो सब खुल जायेंगी। हर तरह की बुराईयां, चाहे वो नैतिक हों चाहे मानसिक हों, आतंक-वादी हों, या किसी तरह की भी हों, सत्य को पसन्द नहीं। ऐसी कोई सी भी संस्था ऐसी कोई सी भी व्यवस्था बच नहीं सकेगी क्योंकि उस पर सत्य का प्रकाश पड़ेगा। इस सत्य के प्रकाश में आप शक्ति की विशेष प्रकृति देखियेगा, उसकी एक विशेष आकृति देखियेगा। कारण, मैंने आपसे पहले बताया था कि अब कृत-युग शुरू हो गया और इसके बाद सत्य-युग आयेगा और यह भी बता दिया था कि अब सत्ययुग का सूर्य क्षितिज पर आ गया है। इसकी प्रतीति आपको मिलेगी, इसका (Proof) प्रमाण आपको मिलेगा कि सत्य के मार्ग में जो भी असत्य लायेगा वह पकड़ा जायेगा। फिर वो सहजयोगी ही क्यों न हो। वो अपने को सहजयोगी कहलाता है और गलत काम अगर करता है, तो वो बच नहीं सकेगा। उसको आज तक सत्य ने बचाया, सम्भाला, उसकी रक्षा करी। लेकिन अब इससे आगे उसमें शक्ति नहीं, सहज में वो शक्ति नहीं है कि वो सत्य के आगे ऐसे लोगों को बचा सके जो सत्य का तमगा लेकर चलते हैं।

सत्य में सबसे बड़ी शक्ति आपने मैंने परसों ही बताया था कि प्रेम की है। प्रेम की शक्ति सबसे बड़ी है। प्रेम का मतलब अहंकार रहित, किसी अपेक्षा के बगैर किसी भी आशा (expectation) के बगैर प्रेम का साम्राज्य फैलाना। यह शक्ति कार्य करेगी किन्तु वह जो शक्ति चैतन्य की है, वो आपके ही माध्यम से कार्य कर सकती है। अगर चैतन्य स्वयं ही इस कार्य को कर सकता, तो आज आप लोग सहजयोगी नहीं बनते और सहजयोगियों की कोई ज़रूरत भी नहीं रहती। लेकिन आज जो सहजयोगियों की ज़रूरत आप समझ रहे हैं कि कितनी है कि सामूहिकता में सहजयोगी तैयार हो रहे हैं। इसका कारण यह है कि चैतन्य का वहन उसके (चैनल) माध्यम आप लोग हैं। अब इसे वहन करने वाली जो धाराएँ हैं उनको समझ लेना चाहिये कि आपको किसी भी गलत काम की ओर नज़र तक

नहीं उठानी चाहिये क्योंकि आप स्वयं शक्ति से संचालित हैं। आपमें हर तरह की शक्ति वहन हो रही है। तो वो ही शक्ति आपको शक्तिवान, बलवान हर तरह से समृद्ध और स्वस्थ बना सकती है। आपको और किसी चीज़ का आलम्बन करने की ज़रूरत नहीं। जैसे ही आप किसी दूसरी चीज़ का आलम्बन करेंगे, आप गिर जायेंगे। जैसे मैंने देखा है कि बड़े-बड़े लोग होते हैं जो अपने को बड़ा कहलाते हैं। वो खबर भेंजेंगे कि हमें माँ से मिलना है, हम उनसे (Specially) विशिष्ट रूप से मिलना चाहते हैं। कोई विशेष होते नहीं हैं, पर हमको मिलना है। अब अगर मना करो तो लोग कहते हैं कि माँ वो बहुत सतायेंगे, तो मिल ही लीजिये उनसे। अब सब गिड़गिड़ा कर कहते हैं तीन बार कहेंगे कि वो आने वाले हैं, वो आने वाले हैं। उसके इशतहार लग जायेंगे। और वो आयेंगे, पार हो जायेंगे और ठीक भी हो जायेंगे, उसके बाद वो पूछेंगे भी नहीं। क्योंकि वह समझते नहीं हैं कि सत्य की शक्ति कितनी ज़बरदस्त है। एक बार अगर आप सहज में आ गये तो बेहतर है कि आप सहज में उतर जाएँ नहीं तो बचत नहीं है। हर बार इन्सान यही सोचता है कि मेरा क्या फायदा सहज में आने से? मेरा लड़का बीमार है, तो मेरी लड़की बीमार है तो मेरा फलाना है तो ढिकाना है तो मेरे पैसे गायब हो गये, तो आयकर (Income Tax) आ गया, फलाना हो गया और ढिकाना हो गया। लेकिन यह सब आफते जो हैं एक साथ आपको टल जायेंगी।

सबसे पहले तो मनुष्य में अगर समाधान भी नहीं आया तो सहज बेकार है, उसके लिये। अब समाधान जब आ जाता है, वस बहुत हो गया अब नहीं चाहिये कुछ भी। कोई गलत काम करने की ज़रूरत नहीं। कोई सा भी ऐसा काम करने की ज़रूरत नहीं कि जो हानिकारक हो समाज को, दूसरे को, आप को, किसी को भी हानिकारक कार्य करना सहज के बाद फलित नहीं हो सकता, उसका नुकसान उठाना पड़ेगा। हमने देखा, बहुत शुरू में बहुत से सहज में ऐसे लोग आयें, रुपया बनाया, पैसा बनाया, झगड़े किये, लड़ाई करी, यह करा, वो करा, इसके सिवा कुछ किया नहीं सहजयोग में। फिर खत्म हो गये क्योंकि सहज की शक्ति ऐसी है कि ऐसे लोगों को परे ढकेल देती है। फिर वो ठीक होकर वापस आ जायें, तो दूसरी बात है। जैसे समुद्र में दो शक्तियाँ होती हैं, एक शक्ति से तो बाढ़ आती है और एक से तो समुद्र पीछे जाता है। इसी प्रकार इस सत्य की शक्ति है जो स्पन्दित होती है, स्पन्द का मतलब होता है जो एक बार संकुचित होता है

और एक बार पूरी तरह से खुल जाता है। उस हृदय में ही स्पन्द होता है। आदि शंकराचार्य ने (Vibration) चैतन्य लहरियों को स्पन्द कहा है। स्पन्द का मतलब है कि जो एक बार आपको उठायेगा वो दूसरी बार आपको गिरा भी सकता है। यह मैं आपको डरा नहीं रही हूँ, पर सूचना दे रही हूँ कि अब परिवर्तन हमें ऐसा करना चाहिए कि जिससे सहज में हम अग्रसर हो सकें। मैंने परसों कहा था कि उत्तरी भारत में सहजयोग बहुत ज़ोरों से फैल रहा है, बहुत ज़ोरों से। हर जगह जैसे आग लग गई हो, लोग सहज में आ रहे हैं क्योंकि सहज से लाभ बहुत है। तन्दरुस्त अच्छी हो जायेगी, कई लोगों को धन-लाभ हो जाता है, किसी को पुत्र-लाभ हो जाता है, कोई न कोई लाभ हो ही जाता है। किसी का बहुत ज्यादा, किसी का कुछ कम। किन्तु सबसे बड़ा लाभ सहजयोग का यह है कि समाधान—कि इससे आगे अब कुछ नहीं चाहिये। मुझे और कुछ नहीं चाहिये। मैं सब पा चुका हूँ। यह जब स्थिति आपकी आ जायेगी तब समझना कि आप सहज में उतर गये। और फिर अनायास आप कुछ चाहें या न चाहें सहज आपकी देखभाल करेगा। आपको सर्वदा, पूर्णतया सन्तुष्ट कर देगा। आपका समाधान जो है वो सातवीं श्रेणी में पहुँच जायेगा। लोग कहेंगे इनको क्या हो गया? यह क्यों इस तरह से निरीच्छ हो गये? इनको क्या किसी तरह का सन्यास मिल गया? कोई परवाह ही नहीं। एक बार अमरीका में गये थे। वहाँ एक दुकानदार स्त्री थी। उसको हमने जागृती दी। तो कहने लगी कि माँ कमाल है। जागृती के बाद मुझे कुछ याद ही नहीं रहता। पहले मुझे दुकान की हरेक चीज़, कौन सी चीज़ आई कौन सी चीज़ गई; क्या मिला, क्या नहीं मिला, हरेक बात की मुझे पूरी परवाह रहती थी और हरेक चीज़ मैं लिख लेती थी और तो भी मुझे कभी नफा नहीं हुआ। हमेशा देखती थी कि नुकसान ही होता है। जो चीज़ आये वो बिके ना। सहज के बाद यह हालत हो गई कि अब ना तो मैं गिनना जानती हूँ ना ही मुझे कोई चीज़ याद है, और देखिये कमाल कि मुझे नफा ही नफा हो रहा है! पता नहीं कैसे नफा हो रहा है! कौन मेरा सामान बेच रहा है! कौन खरीद रहा है! कौन पैसा दे रहा है! मुझे किसी भी चीज़ की खबर नहीं। और इस बेखबरी में ही सब कुछ बना जा रहा है। माने, सहज ने अपनी गोद में ले लिया उसे और सारी जो कुछ परेशानियाँ थी, नाप-तोलने की, बेचने की नफा कमाने की, वो सब खत्म हो कर, वो बस मस्ती में आ गई, कहने लगी, अब क्या मेरी तो दुकान कोई चला ही रहा है, पक्की बात है। मैं नहीं अपनी दुकान चला रही। और सब चीज़ इस प्रकार हो जाने से मनुष्य समझ जाता है कि अब मैं समाधान की सातवीं मन्त्राल पर पहुँच गया। उसको सोचना भी नहीं पड़ता। विचारों से परे यह दशा है। अब इसका कारण यह है कि सहज से पहले हम विचारों पर रहते हैं। हर चीज़ आप गिनते रहते हैं, हर चीज़ आप नापते रहते हैं, घड़ी हर बार आप देखते रहते हैं और हर समय आप देखते हैं कि कुछ न कुछ छूट ही जाता है। बहुत हिसाब-किताब रखने पर

भी आप देखते हैं कि सरदर्द हो गया लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। क्योंकि सहज में आपने यह कार्य अपने ऊपर कैसे ले लिया— क्योंकि यह तो सहज कार्य है, स्वतः (Spontaneous)। सहज में हर चीज़ एकदम सहज हो जाती है। यह आपको तो धीरे-धीरे अनुभव आते ही रहेगा। लेकिन सहज पर निर्भर हो जाना। यह शक्ति आज सत्य-युग में कार्य कर रही है। जिस दिन आप पूरी तरह से सहज पर निर्भर हो जायेंगे तो सहज से सारा ही आपका कार्य, आपका जीवन ही पूरी तरह से प्लावित हो जायेगा। और आपको किसी भी प्रकार की दखल देने की ज़रूरत नहीं। एक बार हमारे यहाँ चोरी हो गई। हमारी सब साड़ियाँ चोरी हो गई मुश्किल से एक साड़ी सिल्क की बची। वही पहन करके मैं सारी पार्टियों में जाती थी और सब जगह जाती थी। हमारे पति भी सोचने लगे कि इनको क्या हो गया, एक ही साड़ी पहनती हैं। मैंने कहा मेरे पास अब सिर्फ एक ही है। अब आप लोग इतनी साड़ियाँ मुझे देते हैं कि मैं मना भी करती तो साड़ी पर साड़ी, साड़ी पर साड़ी। तो मैंने कहा, अब अगर द्रोपदी वस्त्र हरण का आप इन्ज़ाम करें तो कुछ ठीक हो जाये क्योंकि मैं रखूँ कहाँ? मैं तो पहनती भी नहीं यह सब साड़ियाँ। लेकिन समाधान मिलना यह ही सबसे बड़ा आशीष है। अब अगर समझ लीजिये कि हमें कोई चीज़ पसन्द आई और हम उसके लिये दौड़ रहे हैं कि हमें वो चीज़ चाहिये, ज़रूरी चाहिये। उसके लिये मरेंगे कि वही चीज़ लेनी है कि वो देखिये हमें पसन्द वही है। मर-मराकर ली भी, कर्ज़ा लेकर ली, चाहे जैसे भी ली। और उसके बाद उसकी ओर देखते नहीं। फिर दूसरी चीज़ की ओर देखने लगें। जो चीज़ पाई उसी का सुख नहीं, उस को देखना नहीं।

आजकल इतने सुन्दर फूल खिले हुए हैं दिल्ली शहर में, मैं वो ही रास्ते भर देखती आ रही थी। इतने सुन्दर फूल खिल रहे हैं पेड़ों पर। आपमें से न जाने कितनों ने देखे हैं कि नहीं देखे हैं। अब ध्यान कहाँ है।

ध्यान आपका अगर अपने आत्मा पर है तो आत्मा वही चित्र दिखायेगी जो सुखदायी है, जो आनन्दमयी है। और उसमें फिर स्वार्थ असल में पाया जाता है, क्योंकि इसमें आप स्व का अर्थ जान जाते हैं। कैसे शब्द लगाये हैं देखिये, अपने जो पुरखे हो गये पूर्वज, उन्होंने दूढ़-दूढ़ कर शब्द लगाये कि तुम स्वार्थ दूढ़ो। स्वार्थ माने स्वः का अर्थ। पहले लोग सोचते थे स्वार्थ का अर्थ पैसा कमाओ ये करो वो करो, पर उसमें सुख नहीं मिला। जब खोजते-खोजते आप पगले हो जायेंगे तब फिर आप स्व की ओर दौड़ेंगे। इसलिए उन्होंने कहा कि पहले तू स्वार्थ खोज, इसमें तेरा क्या स्वार्थ है वो देख, इसमें तेरा कौन सा फायदा है वो देख। सहजधारा में जब आप बहते हैं तब इस सत्य-युग में आपको जान लेना चाहिये कि आप को जो सम्भालने वाला है जो देखने वाला है, उसके करोड़ों हाथ हैं और उसके आँचल में आप चले गये। अब क्यों गलत काम करो? क्यों ऐसी वैसी बात करो जिससे कि आप पकड़ में आ जाये और बेकार में परेशान हो

जायें और अगर आप किसी चीज़ में पकड़ में आ भी गये तो भी ऐसे छूट जायेंगे। उदाहरण के लिये हम बतायें कि हमने पाँच मूर्तियाँ खरीदी मिट्टी की कैंडे में, बहुत सुन्दर थी, सोचा ऐसी मूर्तियाँ हमारे यहां बनें। अब सिर्फ मिट्टी की मूर्तियाँ पाँच खरीदीं तो हमारे (Custom) सीमा शुल्क वालों ने उसके दाम 18,000 लगा दिये। मुझे बड़ी हंसी आई कि मिट्टी की पाँच मूर्तियों का दाम अट्ठारह हजार हो सकता है क्या? अट्ठारह रुपये भी नहीं होगा। मैं हंसती रही तो वो पुलिस वालों के पास खबर गई, तो वो भी हंसने लग गये। मैंने कहा, देखिये क्या तमाशा है कि इसके दाम अट्ठारह हजार हो सकते हैं? और वाकई में वो सब छूट गया। क्योंकि ग़लत चीज़ में पकड़ा उन्होंने। तो सहज अपने आप ही सब चीज़ को ठीक कर देता है, जिस चीज़ की ज़रूरत है, जो ज़रूरी होना है जिसकी आवश्यकता है वो कार्य सहज ही कर देता है। तो सहज पर चीज़ छोड़ना आना चाहिये। सबसे बड़ी बात है यह चीज़ सहज पर छोड़ दो। बहुत सी बातों में हम देखते हैं कि लोग बेकार में परेशान हैं, बेकार में परेशान हैं, और इस परेशानी का मतलब यह है कि वो सहज नहीं है।

तो एक तो इस सत्य-युग में शक्ति का जो स्वरूप है वो है प्रकाश और दूसरा सत्य, तीसरा प्रेम और चौथा मन की शान्ति। आप मन की शान्ति को प्राप्त कर लेते हैं, जो भी होता है उसे आप देखते रहते हैं। कोई भी आदमी अगर विचलित होता है तो वह सहजो नहीं है। आपने कितनों के नाम सुने होंगे। सुक्रान्त (Socrates) का नाम सुना होगा, ये हज़रत निज़ामुद्दीन साहब का सुना होगा, कि इनको तो कहा गया था कि अगर तुम कल आकर हमारे सामने सर न झुकाओगे तो हम तुम्हारी गरदन काट देंगे। तो उस शह-शाह की गरदन कट गई रात में। वो किसने काटी? उन्होंने थोड़ी काटी, उनके शिष्यों ने थोड़ी काटी, किसने काटी? किसी ने तो काटी होगी। इस प्रकार हर चीज़ सहज में हर प्रकार मैंने कहा, दो तरफा चलती है। जैसे समुद्र में बाढ़ भी आती है और संकुचित भी हो जाती है उसी प्रकार सहज में भी आप दो शक्तियों के द्वारा देखे जाते हैं। पहली शक्ति से बढ़ावा और दूसरी शक्ति से आपको निकाल दिया जाता है। एक बार सहज से आप निकल गये तो फिर हमारा आपका कोई सरोकार नहीं। हमारे ऊपर आपका कोई अधिकार नहीं। कोई भी आपको अगर हमारे ऊपर अधिकार देता रहा है तो पहले सहज में घुलमिल लेना चाहिये। जैसे स्वर्ण है तप कर के जब वो कुन्दन हो जाता है तो उस कुन्दन में वो शक्ति आ जाती है कि वो हीरे को पकड़ लेता है। कुन्दन में जब आप हीरा बिठाते हैं तो उसके लिये कोई भी ऊपर से टांका लगाने की ज़रूरत नहीं। कोई चीज़ से पकड़कर लगाने की भी ज़रूरत नहीं। वो कुन्दन, इतनी मुलायम चीज़ कुन्दन, पकड़ लेता है हीरे को। हीरे से बड़कर और कोई कठोर चीज़ संसार में नहीं। इसी प्रकार आपका भी कुन्दन हो सकता है। और वो कुन्दन में आप देखेंगे कि आपके अन्दर समाधान की शक्ति आ जायेगी। समाधान में विचार नहीं होता,

विचार से परे है। सहजयोग से आप बुद्धि से परे, भावनाओं से परे, गुणातीत, एक ऐसी दशा में हैं कि जहाँ कोई विचार नहीं आता। कोई विचार नहीं आता। आप किसी की तरफ देखकर के उस पर कोई विचार नहीं करते सिर्फ देखते रहते हैं। यह विचार करने की जिसको प्रतिबिम्बित (Reflection) करते हैं, जो कोई बात हुई, फौरन विचार शुरू। किसी चीज़ को देखा तो विचार शुरू। लोग पगला जाते हैं विचार कर कर के। एक साहब ने मुझसे Switzerland में कहा कि मैं चाहे आप मेरी गरदन काट दो पर मुझे विचार के तुफ़ान से बचाओ। खुद डाक्टर हैं वो। तो यह जो विचार हमारे अन्दर अहंकार की वजह से या संस्कारों की वजह से, बंधे हैं और उसको बांधने वाले और भी बहुत लोग हैं। किताबें पढ़ो, किसी गुरु के पास जाओ, किसी से मिलो, बातचीत करो, वाद-विवाद करो। रामदास स्वामी ने कहा है, मिटे वाद-सम्वाद ऐसा कराओ। जिससे तुम्हारा वाद-विवाद का स्वभाव ही बदल जाये ऐसी बातचीत करो, माने वाद-विवाद मत करो। यह बात बिल्कुल सही है कि हम लोग सहज में आते हैं तो भी हर एक चीज़ का हम विचार करते हैं। लेनि सहज का चमत्कार हम जानते नहीं कि जब हमने अपने को सहज के हवाले कर दिया, पूरी तरह से हम सहज के हवाले हो गये तो विचार भी सहज ही करेगा और सहज ही उसका हल भी करेगा जो हम नहीं जानते। पर प्रश्न हमारे चारों तरफ है। अब आज मैंने कहा था कि तीन बजे पूजा होगी। मैं जानती थी कि सब घर गृहस्थी वाले लोग हैं, तीन बजे कैसे पहुँच पायेंगे। देर ही होने वाली है उसमें कोई हर्ज नहीं, आराम से आयेंगे। आराम से चलो। बहुत बार आदमी सोचता है कि मेरा रास्ता भूल गया और वो परेशान रहेगा है कहीं से रास्ता ढूँढ़, किससे पूछूँ, क्या करूँ, मेरा रास्ता रह गया। यह रह गया वह रह गया। अगर आपका रास्ता खो गया है तो सहज के कारण। या तो आपको किसी से मिलना है या आपको किसी चीज़ से गुज़रना है या किसी चीज़ का आपको अनुभव लेना है इसलिये आपका रास्ता खो गया, चिन्ता करने की कौन सी बात है? आखिर आप करने क्या वाले हैं कोई लड़ाई है कोई युद्ध है वहाँ जा रहे हैं? और युद्ध में भी अगर सहजयोगी जायें तो वो युद्ध तो जीत लेंगे, लड़ेंगे-वड़ेंगे कुछ नहीं। सत्य में विचार की शून्यता आने से मनुष्य जान लेता है कि विचार जो है वो शक्तिहीन है और जहाँ-जहाँ जिन देशों में बहुत लोगों ने विचार पर निर्भरता रखी, जैसे अमेरिका का देश है तो फ्रायड जैसे गधे आदमी पर, गधे से भी ज्यादा कहना चाहिये, मुझे इतनी गालियाँ नहीं आती। ऐसे महामूर्ख, दुष्ट, आदमी को उन्होंने भगवान मान लिया। और हर समय वह यह सोचते हैं कि हमको आनन्द उठाना चाहिये और हर आनन्द ऐसा बनाया हुआ है कि उससे वो नष्ट हो जायें। हर एक चीज़ उनकी, कोई चीज़ ऐसी है ही नहीं जिसमें नष्टता की भावना न हो। और जब तक वो नष्ट नहीं होते तब तक वो सोचते नहीं कि उनके आनन्द की परिसीमा क्या होगी? जैसे उनके खेल देख लीजिये, पहाड़ों पर जायेंगे। वहाँ स्कीइंग करेंगे, वहाँ टांगे टूटेंगी, किसी

को (Kidney) गुदा गायब, किसी का कुछ। अब सामने दिखाई दे रहा है पर वहीं जायेंगे। हमारे नसीब जहाँ भी रहते थे, उसके पास एक चर्च होता था और चर्च के पास एक पब दोनों साथ। अब जो लोग पब में जाते थे, वो देख रहे हैं कि अन्दर से लड़खड़ाते हुए लोग आकर ज़मीन पर गिर रहे हैं। और यह क्यूँ लगाकर अन्दर जाते थे कि हमें भी ऐसा ही बनाओ, हम भी लड़खड़ाते आयें। यानि विचार से अक्ल मारी जाती है। अक्ल से जो-जो काम किये मनुष्य ने अंहकार में वो सब गलत हो गये। इसी से उनका भोग हम लोग उठा रहे हैं। लेकिन अगर आत्मा के प्रकाश में जो कोई-सा कार्य करता है तो सुचारू रूप से ही होता है, ठीक ढंग से होता है, समझदारी से होता है। लेकिन न सूझ-बूझ, न समझदारी, इस विचार में है क्योंकि इसमें वो चेतना ही नहीं। तो आज जब सत्य-युग का समय आ गया और हम जब सत्य के मार्ग में चल पड़े तो पीछे मुड़कर देखने की कोई भी ज़रूरत नहीं क्योंकि आपके साथ सबसे बड़ी शक्ति, प्रकाशमान है, आप प्रकाश में चल रहे हैं; प्रकाश भी ऐसा कि जिसमें आप की छाया नहीं पड़ती, आगे भी प्रकाश दोनों तरफ प्रकाश और पीछे भी प्रकाश। लेकिन यह प्रकाश की ज़ोत, आपको पूरी तरह से प्रज्वलित करनी पड़ती है। उसके लिये छोटा मार्ग मैं बतलाती हूँ कि आप सब लोग ध्यान करें। वो भी नहीं होता विशेषकर स्त्रियों के लिये कहा जाता है कि यह लोग ध्यान-व्यान नहीं करती। सारा चित्त-खाना बनाना, बच्चों में, इसमें उसमें लिपटाना। आश्चर्य की बात है कि औरतों को तो सबसे पहले ध्यान करना चाहिये। क्योंकि वो समाज की शक्ति हैं, पहली बात। स्त्री का सबसे बड़ा कार्य यह है कि वो समाज को बनाती हैं। यह नहीं कि वो कोई कहने लगा कि रूस में औरतें मोटर चलाती हैं और ट्रेने चलाती हैं और वो एथरोप्लेन चलाती हैं। तो उन्होंने कौन से बड़े भारी काम कर दिये। अपने आदमियों को तो नौकरी नहीं, तो आप लोग क्यों चाहते हैं कि मोटर चलायें और टैक्सी चलायें। आप का कार्य समाज को सुव्यवस्थित करना है। समाज को अपने आपको बनाना है और उसके लिए एक समाधानी वृत्ति होनी चाहिए, एक सूझ-बूझ होनी चाहिये। और इस सूझ-बूझ के साथ एक स्त्री के पास विनम्रता होनी चाहिये। नम्रता स्त्री में नहीं हो तो वो मर्द हो गई। वो अगर हावी हो जाये और हर चीज़ में वो सोचे कि मुझे आदमी से मुकाबला करना है, तो गलत बात है। यह भी कोई मुकाबला करने की चीज़ है? आप स्वयं शक्तिशाली हैं आपको क्या ज़रूरत है कि किसी का मुकाबला करें? मैं बार-बार इसलिये कह रही हूँ कि जिस-जिस देश में औरतों ने सामाजिक स्थिति का भार अपने सिर पर नहीं लिया वो-वो देश आज डूब रहे हैं और खत्म हो जायेंगे। अपने बच्चों को सम्भालना, घर को व्यवस्थित रखना, यह बड़ा भारी कार्य है। हाँ अगर ज़रूरत पड़े नौकरी कर लीजिये पर जैसे कि आदमियों के लिये मैं कहती हूँ कि अच्छा ठीक है आप लोग अगर खाना बनाना चाहते हैं तो बनाईये कोई हर्ज नहीं, सीखना चाहिये पर वह उनका मुख्य कार्य नहीं। इसी प्रकार स्त्री के लिये ज़रूरी है कि वो अपनी

शक्ति को प्रज्वलित करे। और इस देश की औरतों ने ही यहाँ इस देश का समाज रोका हुआ है, यह मान लीजिये आप लेकिन ज़बरदस्ती से नहीं-प्रेम से, प्रेम से और वो भी निवाज्य प्रेम। इस देश में ऐसी-ऐसी औरतें हो गई हैं-पन्नादाई। जिसने अपने बच्चे को युवराज को बचाने के लिये कटवा दिया, ऐसी-ऐसी इस देश में औरतें हुई हैं। लेकिन यह इतिहास मात्र हो गया। मैं कभी विदेश में बताती हूँ कि पद्मिनी ने 3000 औरतों के साथ जौहर किया तो वो विश्वास ही नहीं करते, कि ऐसे कैसे हो सकता है? मैंने कहा कि हमारे देश में ऐसी औरतें थीं। उन्हीं के बलबूत पर हम आज तक टिके हैं क्योंकि जिस तरह का अन्हकार इस देश में चला हुआ है, यह कब का खत्म हो गया होता। उन्हीं की पुन्यायी पर आज हम लोग चल रहे हैं। वो ही पुन्यायी आज इस सत्य-युग में एक विशेष रूप धारण करके सामने खड़ी है। उसका चमत्कार अब देखिये कि रूमनिया के लड़के कैसा गाना गा रहे थे। इन्होंने कभी अपने सरगम तक सुने नहीं कोई इनको शिक्षा मिली नहीं। कल वो बता रहे थे इतने बड़े वादक कि साहब, इसके लिये सालों तपस्या करने पर भी ऐसा ज्ञान नहीं आता, यह कहाँ से आ गया। कैसे हो गये, चमत्कार ही है न।

आपके निजी जीवन में सहज के बाद अनेक चमत्कार आये। पर तो भी आप अपने विचारों पर ही निर्भर रहें। तो उस पर भी एम दास जी ने कहा है "आल्पधारिष्ट पाये" परमात्मा कहता है, "तुझे जो भी करना है कर।"

तो सहज में भुलने के बाद एक बड़ी मस्ती है। बहुत बड़ी मस्ती है, जब मस्त हुए फिर ब्या बोलें, उस मस्ती में आ जाना चाहिये। फिर इसका मतलब यह नहीं कि आप पागल जैसे घूमिये। इस मस्ती में आप कर्त्तव्य-परायण हो जाते हैं। और उसके लिये आपको शक्ति मिलती है। अगर आप शक्ति चाहते हैं तो उसके लिए, पहले, सबसे पहले सहज में आप पूरी तरह उतरिये। सब दुनियाभर की चीज़ छोड़िये। अब किसी को पैसा चाहिये किसी को सत्ता चाहिये, किसी को ये चाहिये किसी को वो चाहिये। जिस ने कहा दिया—"मुझे कुछ नहीं चाहिये, अब हो गया।" चाहत जब सब खत्म हो गई तक फिर परम चैतन्य सोचता है कि अच्छा तेरी चाहत मैं पूरी करता हूँ। तब फिर उसकी चाहत आपकी चाहत हो जाती है। वो ऐसे-ऐसे चमत्कार करेगा कि आप हैरान हो जायेंगे। हमने तो सोचा भी नहीं यह कैसे हो गया यह कैसे बन गया। दुनिया भर की आपतें और दुनिया भर की परेशानियाँ दूर हो जाती हैं। फिर आपको माँगने का कुछ नहीं रह जाता फिर आप देने वाले हो जाते हैं सिर्फ देने वाले। माँगने का क्या? माँगने का तो वही करेंगे जिनके पास कमी रह गई और जो समाधान के सागर में डूब गये वो क्या माँगेंगे? चारों तरफ देखकर के कि यह क्या करेंगे इसकी क्या ज़रूरत है। इसको लेकर क्या करेंगे। पर इसका मतलब यह नहीं कि आप सन्यासी हो जायें और जंगल में धूमों। इससे हमारे यहाँ राजा जनक का बहुत सुन्दर वर्णन है, उनको विदेही कहते थे। वो राज्य

करते थे उनके सामने नृत्य होता था, संगीत होता था और उनके बड़े भारी प्रोसेशन (जुलूस) निकलते थे, सब कुछ होता था पर उनको लोग विदेही ही कहते थे। तो एक शिष्य ने, नचिकेता ने, अपने गुरु से कहा कि जब वो आते हैं तो आप क्यों खड़े हो जाते हैं? कहने लगे कि वो हम से बहुत ऊँचे हैं आपको पता नहीं। उन्होंने कहा, "कैसे?" "हमने तो सब संसार छोड़कर, सन्यस्त भाव लेकर फिर कुछ अनुभव लिया; यह तो बगैर छोड़े हुए ही उससे बसे हुए हैं।" तो छोड़ने का है क्या, अगर आपने पकड़ा है तो आप कहेंगे कि मैंने इसे छोड़ा, उसे छोड़ा। पर जब पकड़ा ही नहीं तो छोड़ेंगे क्या? वो पकड़ जो हमारे अन्दर विचारों से चाहे संस्कारों के कारण और अहंकार के कारण जाती नहीं है तो इसका मतलब कि आप सहज में उतरे नहीं। किसी भी चीज़ की पकड़ तभी होती है जब हम चीज़ को इतना महत्वपूर्ण समझते हैं। आत्मा की कोई पकड़ नहीं, वो तो देने वाला है, वो तो प्रकाश चारों तरफ फैलाने वाला है। वो शक्ति देने वाला है, ऐसी शक्ति कि उस शक्ति से लोग अभिभूत हो जायें, पूर्णतया उसमें एकाकारिता प्राप्त करें। इतना प्रेम कि सब संघर्ष खत्म हो गया। एक साहब मुसलमान अलजीरिया में थे तो उनके मौं-बाप ने कहा कि हम हज करने जायेंगे। तो कहने लगे कि फिर लन्दन जाओ। पूछने लगे, "लन्दन कैसे?" "कि हज तो लन्दन में आ गया है, अब" "अच्छा" "हाँ वही जाकर तो मैंने पाया। वो लन्दन आये दोनों मियाँ-बीबी। कहने लगे, हमारे लड़के ने बताया कि हज लन्दन आ गया है तो हम तो यहाँ चले आये।" अब यह समझ और सूझबूझ की बात उस एक लड़के में आई और उसके मौं-बाप ने कहा कि "हम तो आ गये यहाँ।" तो मैंने कहा कि तुमने उसकी बात क्यों मान ली। कहने लगे कि वह बहुत ही समझदार लड़का है, उसमें इतना परिवर्तन हो गया कि हमें विश्वास ही नहीं होता कि यह कैसे-ऐसे हो गया? इतने लोग हज पर जाते हैं और कुछ नहीं होता उनमें। जैसे के जैसे ही। शराब पीते हैं तो शराब पीते हैं, बीबी को मारते हैं तो बीबी को मारते हैं, जो करते थे वो ही करते रहते हैं। पर यह एक लड़का हमने देखा कि इसमें बड़ा परिवर्तन आ गया। तो हमने कहा कि ठीक हो सकता है कि हज का भी परिवर्तन अब लन्दन में हो गया होगा। और इसीलिये हम लन्दन आ गये। अब यह मौं-बाप के ऊपर असर आया। यह दूसरी शक्ति है सत्य की, कि सत्य इतना प्रकाशवान, बलवान और इतना प्रेममय होता है कि उसका असर बहुत लोगों पर पड़ जाता है और लोग उसे देखकर कहते हैं कि भई यह आदमी कौन है? ये ऐसे कैसे हो गया?

हमारा सहजयोग इतना फैला नहीं था महाराष्ट्र में। एक साहब सहज में आये, बड़े जबरदस्त, अब नहीं रहे वो। तो वो कलेक्टर के, कोई काम होगा, दफ्तर में गये। वहाँ आराम से बैठे रहे। कोई कहे हमें जाना है पहले। उन्होंने कहा जाओ, वो आराम से बैठे रहे। उसके बाद उनको अन्दर बुलाया। पूछा कि भई तुम इतने आराम से कैसे बैठे रहे। उन्होंने कहा, "करना क्या है, सबको जल्दी थी, मुझे कोई जल्दी नहीं थी, मैं बैठा था आराम से ध्यान लगाकर।" महाराष्ट्र में तो गुरु

की बड़ी महत्ता है, कहने लगे आपको गुरु कौन हैं? कहने लगे "वो मैं नहीं बताऊँगा" "नहीं, बताना ही पड़ेगा" फिर जब वो घर गये तो उनके पीछे चार-पाँच लोग लग गये, उनसे कहा बताइये आप के गुरु कौन हैं, तब तक हम आपको नहीं छोड़ेंगे। उन्होंने मेरा नाम उनका बताया फिर वो सहजयोग में आये। जब मैं वहाँ गई राहुरी में, तो देखा कि आग लगी हुई थी। बापरे! मैंने कहा इतने लोग सहजयोग में कैसे आ गये। एक आदमी को वजह से। एक आदमी के चरित्र की वजह से, उसके बर्ताव की वजह से। देखने में बहुत खूबसूरत नहीं थे वो, पर उनकी जो तेजस्विता थी, उस तेजस्विता से उन्होंने चमका दिया वहाँ। एक आदमी अगर अच्छा आ जये, मैंने आज सवेरें ही कहा था कि "दुनिया झुकती है, झुकाने वाला चाहिये" फिर आप इतने लोग झुकाने वाले हो जायें तो और क्या चाहिये? लेकिन पहले इसका एहसास होना चाहिये कि आप सत्य-युग में बैठे हुए हैं और सत्य की शक्ति आपके पास चल रही है। कोई किसी चीज़ की गल्ल नहीं हमको। सब चीज़ अपने आप घटित हो जायेगी। किसी को समझ में ही नहीं आता कि कैसे हो जाता है। कल मैंने दस मिनट पहले बताया कि मैं खाना यहीं खा लूँगी, घर तो अब जा नहीं सकती क्योंकि कच्चाल लोग बैठे हैं, और दस मिनट में देखते हैं कि चूल्हा भी लगा है, चीजें भी बन रही हैं। वो लोग खुद हैरान हो गये कि मौं पाँच मिनट पहले यह लोग यहाँ आये हैं। पर यह हो कैसे गया। मुझे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा था। (Spontaneous) स्वतः इनका नाम है। मैंने कहा वही हो गया Spontaneous। कैसे कौन सी चीज़ हो जाती है कैसे एकदम कैसे घटित हो जाता है! वो आप बता नहीं सकते। इस परम चैतन्य की शक्ति इसका कोई वर्णन नहीं। किसी ने मुझसे पूछा कि क्या गणेश जी ने दूध पिया? क्या शिवजी ने दूध पिया? मैंने कहा कि पिया होगा। मैं तो परम चैतन्य को देख-देखकर खुदी हैरान हूँ कि मेरे साथ ही इतनी कमाल कर रहे हैं और मुझे भी पूरी तरह से (expose) प्रकट कर रहे हैं। तो यह कुछ भी कर सकते हैं, इनका क्या ठिकाना। पर मुझे नहीं पता कि गणेश जी इतना दूध पीते हैं? बहरहाल आश्चर्य करने के सिवाय और कुछ रह ही क्या गया है? जैसी-जैसी बातें हो रही हैं आप देख रहे हैं। उस पर भी आप अपने ऊपर ही निर्भर हैं तो ठीक है चलने दीजिए।

आप मान लीजिए कि आप सत्य-युग में उतर आये हैं और यह शक्ति हजार तरह से आपको प्रकाशित करेगी हजार तरह से। न जाने कितने आपके अन्दर के गुण खिल सकते हैं और आप सिर्फ एक शब्द जो शिरडी साईं नाथ ने कहा था कि सबूरी को जरूरत है। पर यह सबूरी भी सोच समझ कर नहीं, 'अच्छा सबूरी करो सबूरी करो' ऐसा कहने की जरूरत नहीं। यह सबूरी जो है ये एक स्थिति है उसमें सब कुछ आ गया। एक स्थिति है, उस स्थिति में अगर आप उतर गये तो किसी को कहने की जरूरत नहीं किसी को बताने की जरूरत नहीं वो अपने आप ही सब कुछ घटित हो जायेगा। ऐसी-ऐसी

बातें जो सोच भी नहीं सकते ऐसे ही घटित हो जाएंगी।

इसके अलावा एक बात और भी है विशेष कि आप इस भारतवर्ष में पैदा हुए हैं। बहुत बड़ी बात है ये, पूर्व जन्म के अनेक-अनेक पुण्यों के कारण ही इस योग-भूमि में आप पैदा हुए हैं और इसी में सत्य-युग पहले आयेगा और दुनिया देखेगी कि सत्य-युग क्या चीज है, इसका चमत्कार क्या है। लेकिन आप ही मशालें हैं, आप ही ज्योति है आप ही को यह प्रकाश देना है। इसको अहसास करना चाहिये, इसको समझना चाहिए। इसको अपनाना चाहिए क्योंकि कितनी बड़ी जिम्मेदारी आप पर आज है, यह समझ लीजिए। मैं भी कहीं और जन्म लेती तो अच्छा होता, ऐसे बहुत लोग कहते हैं। कि माँ अगर आप अमरीका में जन्म लेते तो पता नहीं अभी तक लोग आपको कहाँ तक पहुँचा देते। मैंने कहा, नहीं, जहाँ मैंने जन्म लिया वह सबसे ऊँचा प्रदेश है। यह तो बड़े भाग्य से होता है। और यहाँ भी आप लोग समझ लीजिये कि सहजयोग इतने ज़ोरों से फैल रहा है, बहुत ज्यादा लेकिन जो इसका प्रसार हो रहा है, दूर-दूर इतना फैल रहा है उसका मुख्य कारण क्या है? उसका कारण यह है कि आप इस योग-भूमि में पैदा हुए हैं चारों तरफ इसमें चैतन्य भरा है। पृथ्वी से भी इसी देश में सबसे ज्यादा चैतन्य बह रहा है। लेकिन उससे आगे आपको यह देखना है कि आप ही इसके वाहन हैं। आप ही इसको स्रोत तक पहुँचा सकते हैं। अब भी मैं देखती हूँ कहीं न कहीं कमी है। उसको ठीक करिये। उसके पीछे पड़ कर उसको ठीक करिये। किसी तरह ठीक करिये। मुझे यह चीज़ ऐसी करनी है कि यह शरीर, यह बुद्धि अहंकार आदि जो व्याधियाँ हैं उनसे मुझे अपने को बिल्कुल खालिस कर देना है, मुझे साफ कर देना है। और तभी इस देश का उद्धार होगा। बहुत बड़ा भविष्य इस देश का लिखा है और जो यह कहते हैं कि यह देश खराब हो गया है, इस देश में यह खराबी है, वो खराबी है, मैं कहती हूँ कि जो सबसे कठिन समुद्र होता है उसमें वही जहाज़ चल सकते हैं जो मज़बूत होते हैं। इसलिये आपको और भी मज़बूती ज्यादा करनी चाहिये। एक तरफ आप देखते हैं कि घोर अन्धकार है, तो दूसरी तरफ यह होना चाहिये कि महान प्रकाशमय हो। ऐसे आपके जीवन लोगों के सामने उतरने चाहियें। इस बड़प्पन को पाने के लिये कुछ करना नहीं है। भक्ति से, पूर्ण भक्ति के साथ आपको ध्यान करना है, यह ज़रूरी चीज़ है। प्रेम से भक्ति से आप ध्यान करें और फिर इस स्थिति में जो आप पायेंगे वो एक ऐसी असाधारण व्यक्तित्व की प्रतिमा होगी कि लोग कहेंगे कि साहब यह है कौन? ये कहाँ से आये, यह स्वर्ग से उतर कर आये हैं या कि ये कौन हैं? यही आज क्षमता आप रखते हैं, यही आपका (Potential) अन्तःशक्ति है। आप समझ लीजिये कि आपके अन्दर कितना गौरवशाली जीवन कुम्हला रहा है उसको जगाइये। सब दुनियादारी को छोड़िये, उसके मोटर है तो मेरे पास मोटर नहीं, उसके पास फलानी मोटर तो मेरे पास नहीं—क्या करने का है? इसमें क्या रक्खा है? आपको आश्चर्य होगा कि मुझे तो मेरी मोटर का नम्बर नहीं मालूम। वो छोड़िये, मुझे उसका कलर (रंग) भी नहीं मालूम, उसका मेक भी नहीं मालूम। मैं रुपये भी नहीं गिन सकती।

अगर आप मुझे दस रुपये दे दीजिये तो शायद गिन लूँ पर शायद सौ रुपये दूँगे तो गिन नहीं सकती, क्या करूँ? मैं बैंक का चेक नहीं लिख सकती कुछ नहीं कर सकती, बिल्कुल निष्-क्रिय। कोई भी कार्य नहीं कर सकती और देखिये सारा कार्य हो रहा है आप लोग आये हैं बैठे हैं। इसकी सूझ-बूझ अगर आपके अन्दर जग जाये तो आप अपने को अन्दर से सफाई कर लें। चक्र साफ कर डालें, ध्यान करें। और इससे ही सारी दुनिया का उद्धार, जो मैं कह रही हूँ बार-बार, इसी भारत-वर्ष से होना है। उसकी दारोमदार आप लोगों पर है।

तो आज के इस शुभ अवसर पर आप मन में सत्य के रास्ते पर खड़े हो जाइये। सब लोग देखिये कितना चमत्कार हो जायेगा। अरे, अगर आप इस रास्ते पर ही नहीं है तो सत्य आपकी मदद कैसे करेगा? अगर आप गली कूचों में घूम रहे हैं या आप इस ट्रैफिक में फँस रहे हैं तो सत्य आपकी कैसे मदद करेगा? इसलिये आप आज निश्चय करें कि हम इस देश का भाग्य उज्ज्वल करेंगे, अपने चरित्र से और अपनी सहज-शक्ति से। इतना अगर आप अपने अन्दर समा लें और सारी गलत बातें छोड़ दीजिये। अब हम जैसे बहुत सारा सामान लाये सबको उपहार देने के लिए, सब सहजयोगियों को भेंट देने के लिये, अधिकतर तो कस्टम वालों को दिखा ही नहीं। उनको दिखाई ही दिया नहीं कुछ, सोचते हैं कि इसमें है ही नहीं कुछ। क्योंकि उस पर प्रेम का आवरण था कैसे दिखाई देता? कैसे पकड़ते? दिखाई नहीं दिया। अदृश्य हो गया क्योंकि इतने प्रेम से परदेसी भाई आपके लिये सामान ले के आये थे। तो इसमें कस्टम क्या देना? प्रेम का क्या कोई कस्टम होता है? कोई व्यापार करने तो आये नहीं यहाँ। और देखिये कि कमाल है और बड़े विश्वास से माँ हमें मालूम है कस्टम वाले देखते ही नहीं, उनको दिखाई नहीं देता। क्या होता है पता नहीं। एक देवी जी ने यहाँ ऐसी एक चाँदी की थाली लीं तब चाँदी के निर्यात की आज्ञा नहीं थी। उसको मालूम नहीं था, विदेशियों को क्योंकि यहाँ के तो रोज ही कानून बदलते रहते हैं। तो उसने चाँदी की थाली बक्से में रक्खी और ले जा रही थी पूजा के लिये। तो कस्टम वालो ने खोला, ऊपर ही मेरा फोटो था, तो उन्होंने नमस्कार करके बन्द कर दिया। इसी आदान-प्रदान से हमारी सब समस्याएँ हल हो जायेंगी। अब वो कहते हैं कि बीजा नहीं देंगे तो ये कहते हैं कि हम भी नहीं देंगे। तुम इतना रुपया लोग तो हम भी इतना रुपया लेंगे। यह सब खत्म हो जायेगा, एक दिन। एक दिन में सब खत्म होना है क्योंकि सब हम एक ही हैं। यह सारा विश्व एक है, लेकिन मनुष्य के दिमागी जमा खर्च से यह अलग-अलग बंट गया है। यही बात धर्म की है, यही बात हरेक चीज़ की है। दिमागी जमाखर्च से इन्सान अलग-अलग बंट गया है। सहजयोग सबका एकत्रीकरण ही नहीं है, सिर्फ समन्वय ही नहीं है, पर समग्रता है। सबके तत्व को एक साथ बाँधने वालो यह शक्ति आज चलायमान है, उसका आप सब लोग उपयोग करें क्योंकि यह आप ही के अन्दर से प्रकटित होगी।

आप सबको अनन्त आशीर्वाद।